"सुमित्रानंदन पंत का काव्य पर्यावरण चेतना के परिप्रेक्ष्य में"

डॉ. कृष्णात आनंदराव पाटील
हिंदी विभागाध्यक्ष,
श्री शिव-शाहू महाविद्यालय, सरूड।
मोबाईल नं. 9130749494
ई-मेल- Gurupriyangi@gmail.com

शोध सारांश:

मनुष्य और प्रकृति एक दुसरे से जुडे हुए है। मनुष्य को खुद का विकास तो करना ही चाहिए, लेकिन प्रकृति को ध्यान में रखना भी जरूरी है। प्रकृति ठीक हो तो जीव सृष्टि ठीक रहेगी तथा वह ठीक नहीं रहेगी तो हर जीव का अस्तित्व ही खतरे में रहेगा। प्रकृति चित्रण पर काफी लेखन हुआ है, हो रहा हैं। मगर, हिंदी साहित्य के अंतर्गत छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत का काव्य सूक्ष्म तथा सर्वश्रेष्ठ माना जा सकता हैं। उन्होंने प्रकृति की हर हलचल को बारीकी से काव्य में अभिव्यक्त किया हैं। अधिकांश रूप से हिंदी कवियों ने प्रकृति का बाह्य चित्रण किया है। किंतु, प्रकृति को मानवी रूप में देखकर चित्रण किया हुआ दुर्लभ है, जो सुमित्रानंदन पंत के काव्य में हुआ है। पंत जी ने अपने काव्य में प्रकृति के सूक्ष्म से सूक्ष्म हलचल का चित्रण किया हुआ नजर आ जाता है।

बीज शब्द - पर्यावरण, चेतना, काव्य आदि।

प्रकृति और मनुष्य का रिश्ता काफी पुराना है। वह दोनों भी एक-दुसरे के बगैर अधुरे माने जाते है। प्रकृति पर सभी का अधिकार है। उसकी सुंदरता को देखना और उसका उपभोग लेना मनुष्य अपना अधिकार समझता आया है। प्रकृति सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध है। मगर, मनुष्य प्रकृति की देखभाल करने में गंभीर नहीं है। इसी कारण प्रकृति के परिवर्तन को लेकर केवल अपना देश ही नहीं बल्कि पुरा विश्व चिंतित और भयभीत नजर आता है। इसके लिए जिम्मेदार के तौर पर मनुष्य ही नजर आ रहा है। मनुष्य ने हर क्षेत्र में प्रगति को कई सीढियाँ पार की है, मगर उन्होंने प्रकृति पर सोच-विचार बहुत कम किया नजर आ जाता है।

आज प्रकृति पर अनेक काव्य निर्माण हुआ हैं लेकिन यह कहना गलत नहीं होगा कि जिस किसी ने पहला काव्य लिखा होगा वह प्रकृति पर ही लिखा होगा। प्रकृति और मानव के संबंध को लेकर आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने लिखा है- "वन, पर्वत, नदी, नालें, निर्झर, कछार, पटपर, चट्टान, वृक्ष, लता, झाडी, फूस, शाख, पशु-पक्षी, आकाश, मेघ, नक्षत्र, समुद्र इत्यादि भी ऐसे ही सहचर रूप है।" स्पष्ट है की मानव और प्रकृति का एक दूसरे से गहरा रिश्ता है। दुनिया भर के साहित्य में प्रकृति चित्रण हुआ है वैसे हिंदी साहित्य भी प्रकृति चित्रण का सागर है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के हिंदी कवियों और लेखकों ने प्रकृति चित्रण का काव्य लिखा है और आज भी लिख रहे हैं। हिंदी साहित्य में छायावादी काव्य प्रकृति चित्रण का आदर्श काव्य माना जा सकता है। छायावाद के आधारस्तंभ प्रकृति के चितेरे सुमित्रानंदन पंत का काव्य सर्वोत्कृष्ट प्रकृति चित्रण का काव्य माना जाता हैं। पंत जी का कालखंड सन 1900 से 1970 का माना जाता हैं। उनका जन्म प्रकृति की कोख में बसे उत्तरांचल के 'कौसानी' नामक गाँव में हुआ था। उन्हें बचपन में अपने माँ की ममता का साथ बहुत कम मिला ओर प्रकृति का अधिक मिला। अपने जन्मगाँव कि प्रकृति ने उन्हें बचपन से हि आकर्षित किया इसलिए उनके व्यक्तित्त्व पर प्रकृति का गहर असर रहा। पंत स्वयं कहते थे कि काव्य कि प्रेरणा उन्हें प्रकृति से हि मिलती रही। उमाकांत गोयल जी ने सटिक लिखा हैं-"पंत काव्य में प्रकृति के मनोरम रूपों का मधुर और सरस चित्रण मिलता है। 'आँसू की बालिका', 'पर्वत प्रदेश में पावस' आदि कविताओं में प्रकृति के मनोहर चित्र विद्यमान हैं, जिनमें कवि की जन्मभूमि के प्राकृतिक सौंदर्य का वैभव दिखायी देता है।" पंत मानवी सौन्दर्य से अधिक आकर्षित दिखाई देते हैं। उन्ही के शब्दों में-

"छोड द्रुमों की मृदू माया, तोड प्रकृति से भी माया,
बाले, तेरे बाल जाल में, कैसे उलझा दूँ लोचन?
तज कर तरल तरंगों को, इन्दधनुष्य के रंगो को
तेरे भू-भंगों से कैसे, बिंधवा दूँ निज मृग-सा मन?"

प्रस्तुत काव्य पंक्ति में कवि का प्रकृति के प्रति सहज अनुराग और उसकी सूक्ष्म दृष्टि नजर आती है। पंत की 'नौका विहार' कविता में प्रकृति का स्थिर और संश्लिष्ट चित्रण हुआ है देखिए-

"नौका से उठती जल हिलोर, हिल पडते नभ के ओर छोर,
समने शुक की छबि झल-मल, पैरती परी-सी जल में कल,
रूपहलें कुचों में हो ओझल!

लहरों के घूँघट से झुक-झुक, दशमी का शशि निज तिर्यक मुख,
दिखलाता, मुग्धा-सा-रूक-रूक।"

पंत जी ने प्रकृति का मानवीकरण रहस्यमयी और अनोखा किया हुआ दिखाई देता है। आधुनिक काल के कवियों में सबसे सटिक और सहज प्रकृति का मानवीकरण पंत जी ने अपने काव्य में किया हुआ नजर आता है। पंत जी ने संध्या, प्रात, चंन्द्रिका, छाया भाँति खुद अपना परिचय देते हैं। सचेतन बादल को लेकर चित्रण देखने लायक हैं-

"कभी चौकडी भरते मृग से भू पर चरण नहीं धरते।
मत मत्तगंज कभी झूमते सजग शशक नभ को चरते।"

पंत जी ने 'ज्योत्स्ना' में प्रकृति का विराट चित्रण किया है। कविता में सागर अपनी विराट बॉहे फैलाकर इन्दु-करों से अलिंगन की इच्छा व्यक्त करता हैं-

"अगनित बाहें बढा उदधि ने इन्दु-करों से आलिंगन"

हिंदी साहित्य में बादल, भौंरे, कोकिल, चातक आदि को लेकर बहुत सुंदर चित्रण अन्य कवियों ने भी किया हैं लेकिन रंग, ध्वनि, गंध, स्पर्श और स्वाद को लेकर पंत जैसे मिलना कठिण हैं। पंत जी नील लहरों पर सांध्य किरण के बुझते हुए आलोक का चित्रण करते हैं-

पंत छायावाद के प्रमुख कवि रहे हैं। छायावादी कवियों को लेकर डॉ. कृष्णदेव झारी का मतंव्य सटिक लिखा है कि "प्रकृति के साथ जैसा आत्मीयता का संबंध छायावादी कवियों ने स्थापित किया, वैसा पूर्वयुगों में कहीं नहीं हुआ था। प्रकृति के कण-कण को उन्होंने एक सचेतन व्यक्तित्त्व प्रदान किया। पुष्पलता, पशु-पक्षी, तृण-गुल्म सब मानव की तरह हँसने और अपने हृदय के रहस्यों को मानव के सम्मुख प्रकट करने लगे। चराचर प्रकृति मानव के साथ मिल कर एकरूप हो गई।" काव्यों में मानव और किसी प्राणी से एकात्म्य सहजता से नजर आयेगा लेकिन मानव और प्रकृति का एकात्म्य पंत के काव्य में अनोखा हैं। कवि सुमित्रानंदन पंत 'छाया' को समदु:खी मानकर कहते हैं-

"हाँ सखि, आओ बाँह खोल हम लगकर गले जुडा लें प्राण,
फिर तुम तम में, मैं प्रियतम में हो जावें दुत अन्तर्धान।"

"सुमित्रानंदन पंत के काव्य में प्रकृति चित्रण" इस विषय का विवेचन और विश्लेषण करने के पश्चात हम बडी विनम्रता से कह सकते हैं कि प्रकृति और मानव एक दुसरे के पुरक हैं। मानव को अपना विकास तो करना ही चाहिए लेकिन प्रकृति को ध्यान में रखना भी आवश्यक हैं। प्रकृति ठीक हो तो जीव सृष्टी ठीक रहेगी और अगर वह ठीक नहीं रहेंगी तो हर जीव का अस्तित्व ही खतरें में रहेगा। प्रकृति चित्रण पर काफी लेखन हुआ है हो रहा हैं लेकिन हिंदी साहित्य के अंतर्गत छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत का काव्य सूक्ष्म और सर्वश्रेष्ठ माना जा सकता है। उन्होंने प्रकृति की हर हलचल को बारीकी से काव्य में अभिव्यक्त किया है।

निष्कर्ष

साधारणत: कवियों ने प्रकृति का बाह्य चित्रण किया नजर आता हैं लेकिन प्रकृति को मानवी रूप में देखकर चित्रण किया हुआ दुर्लभ हैं जो सुमित्रानंदन पंत के काव्य में हुआ हैं। पंत जैसा प्रकृति का सच्चा जानकार और ज्ञाता कवि मिलना कठीन हि नहीं असंभव भी लगता हैं। पंत जी ने अपने काव्य में प्रकृति के सूक्ष्म से सूक्ष्म हलचल का चित्रण किया हुआ नजर आता हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. सुमित्रानंदन पंत का काव्य, डॉ. शैलेंद्र
2. पर्यावरण और साहित्य, प्रो. रणसिंग
3. कविता और पर्यावरण, श्रीमति उषा शर्मा